समाज कार्य को मिलेगा पेशेवर स्वरूप

शैलेश
असिस्टेंट प्रोफेसर,
एमिटी विश्वविद्यालय

डॉ. संजय भट्ट
प्रोफेसर, दिल्ली
विश्वविद्यालय

समाज कार्य पाठ्यक्रम का सफर आठ दशक से भी पुराना हो चुका है, लेकिन आज भी लोगों के जेहन में समाज कार्य की पहचान झोला लेकर चलने वाले और लोगों की सेवा में तत्पर एक गैर-प्रशिक्षित सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में ही है। ऐसे में नई शिक्षा नीति में समाज कार्य विषय को एक नई पहचान दिलाने की कोशिश हुई है। नई शिक्षा नीति समय की रफ्तार को देखते हुए एक नॉलेज सोसाइटी के निर्माण पर जोर देती है जो जीवन के विभिन्न आयामों के साथ-साथ शिक्षा की समग्र प्रकृति को समझती और स्वीकार भी करती है। आज एक विशेष शैक्षणिक परिवेश की जरूरत है जिसके लिए नई शिक्षा नीति एक राष्ट्रीय शिक्षा आयोग के गठन की बात करती है। आयोग देश के शिक्षा तंत्र की सर्वोच्च संस्था होगा और प्रधानमंत्री इस आयोग के प्रमुख होंगे जिनके नेतृत्व में देश की शिक्षा को एक नई दिशा देने तथा उसे समयबद्ध तरीके से पाने के लिए रणनीतियों का निर्माण होगा। नई शिक्षा नीति के दस्तावेज, राष्ट्रीय शिक्षा आयोग को आने वाले समय में देश के शिक्षा-तंत्र को नियंत्रित-निर्देशित करने में अहम भूमिका निभाने पर बल देते हैं। इस आयोग के नेतृत्व में भारतीय शिक्षा व्यवस्था के उद्देश्य का क्रियान्वयन, शिक्षा के क्षेत्र में सभी स्तरों पर समता तथा उत्कृष्टता प्रदान करना और एक तारतम्यता के साथ आगे बढ़ना है जिसके परिणामस्वरूप लाल फीताशाही थमेगी और पठन-पाठन व शोध कार्यक्रम को बिना रोक-टोक तेज गति से आगे बढ़ाया जा सकेगा। इस तरह ये नई शिक्षा नीति उच्च शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। स्वतंत्र भारत में पहली बार राष्ट्रीय शिक्षा नीति समाज कार्य विषय के पेशेवर स्वरूप को चिन्हित करती है। इस शिक्षा नीति के माध्यम से इस विषय के संदर्भ में सरकार द्वारा एक सकारात्मक पहल हुई जो स्वागत योग्य है।

वैसे इसमें एक पेशेवर सामाजिक कार्यकर्ता के संदर्भ में बहुत ज्यादा सूचना नहीं दी गई है। लेकिन यहां पेशेवर सामाजिक कार्यकर्ता से तात्पर्य उच्च शिक्षण संस्थानों से शिक्षित एवं प्रशिक्षित मानव संसाधन से है जो अपने स्नातक और परास्नातक में पठन-पाठन के दौरान जीवन की चुनौतियों से लड़ने की दक्षता हासिल करते हैं। साथ ही जीवन की विभिन्न चुनौतियों को स्वीकार करने के लिए तैयार रहते हैं। इस नई नीति के माध्यम से आने वाले समय में एक व्यावसायिक सामाजिक कार्यकर्ता की जिम्मेदारी बढ़ने की संभावना है। ऐसे में एक प्रशिक्षित सामाजिक कार्यकर्ता ज्यादा प्रभावकारी साबित हो सकता है।

समाज कार्य विषय व्यक्ति, समूह और समुदाय की समस्याओं पर केंद्रित है। एक पेशेवर सामाजिक कार्यकर्ता व्यक्तिगत और सामुदायिक समस्याओं के निदान की तकनीक और निपुणता हासिल करता है। इसके माध्यम से वह विद्यालय स्तर पर छात्रों के मानसिक तनाव को कम करने के साथ एक बेहतर नागरिक और समाज के निर्माण में योगदान दे सकता है जो नए भारत के निर्माण में एक मील का पत्थर बन सकता है। इस तरह इस नई शिक्षा नीति के मध्याम से समाज कार्य विषय के लोगों के लिए रोजगार के नए अवसर तो दिख ही रहे हैं। साथ ही नई चुनौतियों से निपटने के संदेश भी मिल रहे हैं। इसके लिए इस पाठ्यक्रम से जुड़े शिक्षाविदों को तैयार होने की जरूरत है। भारत में 500 से ज्यादा शिक्षण-संस्थान हैं जहां समाज कार्य की शिक्षा दी जाती है। प्रत्येक वर्ष हजारों पेशेवर सामाजिक कार्यकर्ता जीवन की चुनौतियों से लड़ने की दक्षता हासिल करते हैं। इस समाज कार्य विषय की सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि इस विषय वस्तु से जुड़े लोग बदलते समय की मांग के प्रति कितना उत्तरदायी होते हैं।